प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि (D.El. Ed.)
प्रथम वर्ष

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रश्न पत्र	प्रस्तावित कालखंड	बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
1	बाल्यावस्था एवं बाल विकास **(CHILDHOOD AND DEVELOPMENT OF CHILDREN)**	1	120	70	30	100
2	समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा **Education in contemporary Indian Society**	2	120	70	30	100
3	पूर्व बाल्यावस्था– परिचर्या एवं शिक्षा **Early Childhood Care and Education (Pre-Primary and Primary Education)**	3	120	70	30	100
4	भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास **Understanding Language and Early Language Development**	4	60	25	25	50
5	पाठ्यचर्या में शिक्षण संप्रेषण तकनीकी का एकीकरण **Padagogy and IT integration across the Curriculum**	5	120	50	50	100
6	Proficiency in English	6	60	25	25	50
7	योग शिक्षा **Yoga Education (First Year)**	7	60	25	25	50
8	मातृभाषा /क्षेत्रीय भाषा शिक्षण **Pedagogy of Mother Tongue / Regional Language** क. हिन्दी भाषा शिक्षण **Hindi Language Teaching** ख. संस्कृत **Sanskrit Teaching** ग. मराठी **Marathi Teaching** घ. उर्दू **Urdu Teaching**	8	120	70	30	100
9	Pedagogy of English	9	120	70	30	100
10	गणित शिक्षण (प्राथमिक तथा पूर्व प्राथमिक के लिये) **Pedagogy of Mathematics Education (for Early Primary and Primary School)**	10	120	70	30	1–
	योग			545	305	

Scanned with Ca

व्यावहारिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रश्न पत्र	प्रस्तावित कालखंड	बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
1	स्व बोध **Towards Self-Understanding**	1	16	50	50	100
2	रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा **Creative Drama, Fine Art and Education**	2	10	25	25	50
3	बच्चों का शारीरिक– भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा **Children's Physical - Emotional Health and Health Education**	3	10	25	25	50
4	इंटर्नशिप (शाला स्थानबद्ध कार्यक्रम) **(Teaching Practice and School Internship)**	—	24 दिन	50	50	100
	योग			150	150	300
	(सैद्धान्तिक + व्यावहारिक) महायोग			695	455	1150

Scanned with Car

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

बाल्यावस्था एवं बाल विकास

(Childhood and Development of Children)

(प्रश्न पत्र–1)

पूर्णांक अंक –100
बाह्य मूल्यांकन–70
आंतरिक मूल्यांकन–30

1. औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

प्रारंभिक स्कूल शिक्षकों के लिए बहुत जरूरी है कि वे अपने विद्यार्थी बच्चों को पूरी तरह और गहराई से समझें। यह पाठ्यक्रम प्रारंभिक शिक्षक शिक्षा से जुड़े प्राध्यापकों को बचपन और बाल विकास के अध्ययन से व्यवस्थित रूप से परिचित कराने के लिए बनाया गया है। यह पाठ्यक्रम निश्चित रूप से एक बुनियाद है जिस पर आगे पाठ्यक्रम और स्कूल से संबंधित प्रायोगिक कार्य आधारित होंगे। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्राध्यापकों को प्रारंभिक स्कूली बच्चे और उसके सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश के बारे में जरूरी व आधारभूत समझ बनाने में मदद करना है। इसमें सिद्धान्तों के साथ ही साथ बच्चों और बचपन से जुड़े सामाजिक–सांस्कृतिक मुद्दों को गहनता से समझने के मौके शामिल होंगे। इन सब बातों को शामिल करने के पीछे उद्देश्य है कि सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में बच्चों की विकास संबंधी जरूरतों के प्रति संवेदनशीलता बने।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific objectives)

- बच्चे और बचपन के बारे में आम धारणा की समीक्षा करना (खासतौर से भारतीय समाज के संदर्भ में), बचपन पर असर डालने वाली विभिन्न सामाजिक / शैक्षिक / सांस्कृतिक वास्तविकताओं की संवेदनशील और आलोचनात्मक समझ विकसित करना।
- बच्चे के शारीरिक, गत्यात्मक (motor), सामाजिक एवं भावनात्मक विकास के विभिन्न पहलुओं पर समझ विकसित करना।
- सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में विविध क्षमताओं वाले बच्चों के विकास की प्रक्रिया को समझना।

Scanned with Ca

* बच्चों के साथ रूबरू बातचीत करने के मौके उपलब्ध कराना और बच्चों के विकास के पहलुओं को समझने की विधियों पर प्रशिक्षण देना।

बाल विकास और सीखना के तहत बच्चे, बचपन और सीखने की बदलती हुई मान्यताओं के प्रकाश में विकास के विविध पहलुओं को समाहित किया गया है। अध्ययन के एक विषय के रूप में यह शिक्षक को बच्चों, उनके विकास के विविध पहलुओं और विकास के निहित प्रक्रियाओं को समझने का पर्याप्त अवसर और दृष्टि देता है। साथ ही अनेक प्रकार के कौशल और अवधारणाओं/तरीकों को भी सीखने में मदद करता है। यह सच है कि शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक विकास, जो कि बच्चों के जीवन के शुरुआती सालों में होता है, वह भविष्य में सीखने की नींव रखता है। इसलिए शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे बच्चों, बचपन, बच्चों के सोचने, तर्क करने और सीखने की स्पष्ट समझ रखते हों; वयस्क होने के नाते और खासतौर पर एक शिक्षक होते हुए हम बच्चो की तरफ से खुद ही निर्णय लेते हैं। ये कमोबेश हमारे अपने अनुभवों पर आधारित होते हैं जो हम अवलोकनो के आधार पर हासिल करते हैं। इस तरह हम सभी, खासतौर से शिक्षकों के पास बच्चों के विकास संबंधी कुछ स्वाभाविक समझ होती है। बच्चे नाना प्रकार से सीखते हैं और सभी बच्चे सीखने के प्रति सहज रूप से प्रेरित होते हैं और इस दुनिया को समझते हैं। पर हो सकता है यही सहजता और प्रेरणा, स्कूली विषयों को सीखने समझने के लिए न हो। बाल विकास से परिचित कराने के पीछे यही उद्देश्य रहेगा कि शिक्षक, बच्चों व उनके बौद्धिक और सामाजिक–भावनात्मक विकास संबंधी गहरी सैद्धान्तिक एवं बारीक समझ को हासिल कर पायें। इससे उम्मीद की जा सकती है शिक्षकों में यह योग्यता पनपेगी कि वे पाठ्यचर्या, स्थान, जानकारी और सीखने का संयोजन करते समय समुचित निर्णय ले सकें, जो हो सकता है कि पहले तो बच्चों के बारे में प्रचलित बहुत ही आम धारणाओं और मान्यताओं के आधार पर लिए जाते रहे हों, और जो बच्चों के संबंध में सैद्धांतिक व जमीनी समझ के विपरीत रहे हो।

इसलिए एक विषय के रूप में, पिछले कुछ दशकों में बच्चों को समझने की दिशा में आये बदलावों को इसमें शामिल करना महत्वपूर्ण है। यह आनुवांशिक कारणों वाली मान्यता से निकलकर, व्यवहारवाद, फिर उससे निर्माणवाद और फिर सामाजिक निर्माणवाद तक आता है। बच्चों के विकास संबंधी एक बहुत ही आम प्रचलित जैविक कारणों वाली धारणा से हटकर, हम बच्चों को उनके बहुत ही विशिष्ट संदर्भों में समझने के महत्व को जान पाये हैं। यह सब व्यापक रूप से दूसरे विषय क्षेत्रों के प्रभाव से संभव हो पाया है जैसे कि, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, भाषा विज्ञान और मनोविज्ञान में हुए शोध और विकास। इस प्रश्नपत्र का एक और उद्देश्य यही रहेगा कि शिक्षक, बच्चों को उनके सामाजिक आर्थिक संदर्भ में समझ सकें। इस तरह यह प्रश्नपत्र बच्चों के बीच विविधता को समझने और उसे स्वीकारने, स्थान देने की दृष्टि प्रदान करेगा तथा छात्राध्यापकों को तदनुसार उनकी कक्षा आयोजित करने में मदद करेगा।

Scanned with Ca

3. इकाईवार विभाजन–

सरल क्र.	इकाई का नाम	अंक
1	विकास संबंधी दृष्टिकोण	15
2	शारीरिक– गत्यात्मक विकास	13
3	भाषा सामाजिक एवं भावनात्मक विकास	15
4	समाजीकरण का संदर्भ	15
5	बचपन	12
आंतरिक अंक		30
कुल योग		100

इकाई 1. विकास संबंधी दृष्टिकोण (Perspective in Development)

- **बाल विकास का परिचय :** वृद्धि, विकास एवं परिपक्वता की अवधारणा, विकास के संबंध में विविध दृष्टिकोण की अवधारणा एवं परिचय, मानविकी मनोविज्ञान एवं विकासात्मक सिद्धान्त।
- **बाल विकास के अध्ययन की स्थायी विषयवस्तु :** बहुआयामी एवं बहुलता रूप में विकास, जीवनकाल में सतत् रूप से विकास, विकास पर सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव।
- **बाल विकास के अध्ययन के लिए विभिन्न प्रविधियां:** प्रकृतिवादी अवलोकन, साक्षात्कार, विशिष्ट झलकियां एवं वर्णात्मक कथाएं, पियाजे का बाल विकास का सिद्धान्त।
- **बच्चों की समावेशी शिक्षा :** अवधारणा और प्रविधियां।

इकाई 2. शारीरिक– गत्यात्मक विकास (Physical-Motor Development)

- शारीरिक – गत्यात्मक विकास, वृद्धि एवं परिपक्वता।
- शारीरिक– गत्यात्मक विकास के लिए अवसर उपलब्ध कराने में अभिभावक एवं शिक्षकों की भूमिका, जैसे खेल आदि।

Scanned with Ca

इकाई– 3. भाषा सामाजिक एवं भावनात्मक विकास (Langauage, Social and Emotional Development)

बोलना एवं भाषा विकास

- पूर्व–भाषायी संप्रेषण
- भाषा विकास की अवस्थाएं
- भाषा विकास के स्रोत : घर, शाला एवं मीडिया
- भाषा के उपयोग : संवाद एवं वार्तालाप में बच्चों की बातचीत को सुनना
- संवाद में सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नताएं : उच्चारण
- संप्रेषण के विभिन्न तरीके और कहानी कहना

सामाजिक विकास

- सामाजिक विकास में परिवार, सहपाठियों एवं स्कूल की भूमिका
- सामाजिक विकास में स्पर्धा, अनुशासन, पुरस्कार एवं दण्ड की भूमिका
- संवेगों की आधारभूत समझः गुस्सा, डर, चिंता, खुशी आदि।
- संवेगों का विकास, संवेगों के कार्य, बाल्बी का लगाव सिद्धांत

इकाई 4. समाजीकरण का संदर्भ (Context of Socializaltion)

- समाजीकरण की अवधारणा एवं प्रक्रियाएं।
- समाजीकरण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक भिन्नताएं।
- परवरिश, परिवार एवं वयस्क एवं बच्चों के बीच संबंध, पालन पोषण के तरीके, बच्चों का अभिभावकों से अलग रहना, झूलाघरों में रहने वाले बच्चे, अनाथालय।
- स्कूलिंग : शिक्षक बालक का साथ संबंध एवं शिक्षक की भूमिका
- सहपाठियों के साथ संबंध : साथी मित्रों के साथ संबंध, स्पर्धा एवं सहयोग, बचपन के दौरान उग्रता एवं शरारत।
- सामाजिक सिद्धान्त एवं लैंगिक (जेंडर) विकास : लिंग आधारित भूमिकाओं का आशय, लिंग आधारित भूमिकाओं पर प्रभाव, रूढ़ वादिता, खेल के मैदान में लिंग (पहचान) का प्रभाव।
- शाला त्यागी की समस्या।

Scanned with Can

इकाई 5. बचपन (Childhood)

- बालश्रम, बाल शोषण, गरीबी, वैश्वीकरण विद्यालय से गैरहाजिरी की समस्या एवं वयस्क संस्कृति के संदर्भ में बचपन
- बचपन की धारणा में समानताएं एवं विविधताएं और खासतौर से भारतीय संदर्भ में किस तरह बचपन पनपते हैं।

4.0 अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

- अवधारणात्मक समझ बनाने के लिए कक्षा में परिचर्चा।
- पाठ सामग्री/शोध पत्रों का गहन पाठन।
- असाइनमेंट में उठाये गये मुद्दों और सरोकारों का व्यक्तिगत रूप से एवं समूह में प्रस्तुतीकरण।
- सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक गतिविधियां/अभ्यास कार्य/अन्वेषण, संकलित अवलोकनों, जानकारियों का विश्लेषण एवं वर्णन

5.0 सत्रगत कार्य (Assignment)

बच्चे के संसार में झांकना : क्या और कैसे–1

(लोगों के बीच जाना, रिकार्ड तैयार करना व कक्षा में चर्चा)

नोट : निम्नांकित में से कोई तीन प्रायोगिक कार्य लिये जा सकते हैं–

5.1 प्रायोजना कार्य–1

विद्यार्थी, अखबार में प्रकाशित कोई दस आलेखों को संकलित करेंगे, जिसमें बच्चों के लालन पालन और बचपन से संबंधित मुद्दे होंगे। विद्यार्थी इनका विश्लेषण करेंगे और कक्षा में चर्चा करेंगे।

5.2 प्रायोजना कार्य–2

बच्चों और बचपन के विविध संदर्भों का अध्ययन करने की विधियों का प्रत्यक्ष अनुभव करने के मौके।

विद्यार्थी, विविध पृष्ठभूमि वाले 5 से 14 साल तक की उम्र के बच्चों को समझने के लिए किसी भी बच्चे को ले सकते हैं और उसका अध्ययन करने के लिए केस प्रोफाइल विधि का इस्तेमाल कर सकते हैं। शिक्षक प्रशिक्षक, अलग–अलग विद्यार्थियों द्वारा लाई गई विभिन्न प्रोफाइल से चुनकर कक्षा को इस तरह संयोजित कर सकता है

Scanned with Ca

डी.एल.एड प्रथम वर्ष

विषय : समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा

Education in contemporary Indian Society

(प्रश्न पत्र – 2)

पूर्णांक – 100

बाह्य अंक – 70

आंतरिक अंक – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

इस पाठ्यक्रम मे उन परिस्थितियों और मुद्दों को सम्मिलित किया गया है, जो भारत मे लोगों के जीवन पर असर डालते है और उसका स्वरूप तय करते हैं। छात्राध्यापक भारतीय समाज के ऐतिहासिक, राजनैतिक आर्थिक उतार–चढ़ाव के बारे मे नजरिया बना पायेंगे। यह पाठ्यक्रम भारत की राजनीति, संस्थानों, अर्थव्यवस्था, समाज और मुद्दों से रूबरू कराता है। किसी शिक्षक के लिए, हमारे भारतीय समाज की एक समालोचनात्मक समग्र प्रस्तुत करना बड़ा कठिन हो जाता है। बच्चों के सामाजिक संदर्भों और उनके विविध जीवन अनुभवों को ध्यान मे रखते हुए बात रख पाने की चुनौती उसके सामने होती है। इसलिए इस पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयवस्तु व मुद्दों के जटिल स्वरूप की एक व्यापक समझ के लिए सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों मे इसे ढाला गया है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों व शिक्षकों को समालोचनात्मक ढंग से सोचने और एक व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अपने निजी व सामान्य मत मान्यता को देख पाने में सक्षम बनाता है।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific objectives)

- अवधारणाओं, विचारों और सरोकारों के अंतर–विषयक विश्लेषण से परिचित होना।
- भारतीय समाज के सामाजिक–राजनैतिक आर्थिक आयामों से परिचित कराना और इसकी विविधता को सराहना।
- समसामयिक भारतीय समाज में व्याप्त एवं प्रचलित मुद्दे और प्रस्तुत चुनौतियों की समझ विकसित करना।
- भारतीय समाज की उपलब्धियों, लगातार बनी रहने वाली समस्याओं और प्रस्तुत चुनौतियों को समझने की दिशा में विशिष्ट राजनैतिक संस्थानों, आर्थिक नीतियों और सामाजिक संरचनाओं के बीच संबंधों को समझना।

Scanned with Ca

पाठ्यक्रम की इकाईयों में समसामयिक समाज के राजनैतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों को सम्मिलित किया गया है। पाठ्यवस्तु के सीखने-सिखाने के लिए छात्राध्यापक इन सभी कारकों से रूबरू हों, इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। प्रत्येक इकाई की पाठ्य सामग्री एक दूसरे में गुथी हुई है। इन सभी पहलुओं को पृष्ठभूमि में रखते हुए ही समसामयिक भारत की एक अर्थपूर्ण समझ विकसित की जा सकती है। यह पाठ्यक्रम एक समाजशास्त्रीय, समालोचनात्मक ढंग से सोचने व सवाल उठाने वाले नजरिये की पृष्ठभूमि बनाता है। छात्राध्यापकों से अपेक्षा है कि वे अपनी पूर्व धारणाओं का विश्लेषण करें और उससे परे जाकर सोच पायें।

3. इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	राज्य, राजनीति एवं भारतीय शिक्षा	15
2	2	समाज व शालेय शिक्षा का परिप्रेक्ष्य	15
3	3	भारतीय संविधान एवं शिक्षा	15
4	4	शिक्षा में समकालीन मुद्दे एवं सरोकार	15
5	5	सामाजिक बदलावकर्ता के रूप में शिक्षक	10
आंतरिक अंक			30
कुल अंक			100

इकाई 1 : राज्य, राजनीति एवं भारतीय शिक्षा (State, Politics and Indian Education)

- राज्य एवं शिक्षा
- शिक्षा की राजनैतिक प्रकृति
- नव आर्थिक सुधार एवं शिक्षा पर उनका प्रभाव
- सार्वजनिक शिक्षा बनाम निजी शिक्षा
- सार्वजनिक शिक्षा का निजीकरण
- हाशियाकृत (marginalised) एवं सामाजिक रूप से वंचितों की शिक्षा
- भारत में शिक्षा के अवसरों की समानता लाना

Scanned with Ca

इकाई 2 : समाज व शालेय शिक्षा का परिप्रेक्ष्य (Perspectives on Society and Schooling)

- भारत में वर्ग, जाति, धर्म, परिवार एवं राजनीति के विशेष संदर्भ में सामाजिक संरचना एवं शिक्षा
- संस्कृति एवं शिक्षा
- आधुनिकीकरण, सामाजिक बदलाव एवं शिक्षा

इकाई 3 : भारतीय संविधान एवं शिक्षा (Constitution of India and Education)

- स्वतंत्र भारत की संवैधानिक दृष्टि : तब और अब
- संविधान एवं शिक्षा : शिक्षा की समवर्ती स्थितियाँ , शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान
- विशिष्ट संदर्भों से जुड़े बच्चे (जाति, वर्ग, धर्म, भाषा एवं लिंग) और शिक्षा से संबंधित नीतियां, अधिनियम एवं प्रावधान
- (प्रारंभिक शिक्षा की विभिन्न शैक्षिक नीतियाँ एवं उनका क्रियान्वयन व प्रभाव)
- भारतीय संविधान में समता एवं न्याय, भेदमूलक शाला प्रणाली (differential school) एवं समान पड़ोस शाला (common neighbour school) प्रणाली का विचार
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 एवं म.प्र. नियम 2011

इकाई 4 : शिक्षा में समकालीन मुद्दे एवं सरोकार (Contemporary Issues and Concerns in Education)

- लोकतंत्र एवं शिक्षा
- उदारीकरण एवं शिक्षा
- वैश्वीकरण एवं शिक्षा
- खेतिहर, दलित एवं नारीवादी आन्दोलन और शिक्षा पर उनके प्रभाव
- समानता, निष्पक्षता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लोकतंत्रीयकरण

इकाई 5 : सामाजिक बदलावकर्ता के रूप में शिक्षक (Teacher as Social Transformer)

- एक चेतनशील बुद्धिजीवी के रूप में शिक्षक
- शिक्षक की भूमिका एवं दायित्व
- शिक्षक नैतिकता
- शिक्षक एवं सामुदायिक विकास
- सामाजिक बदलावकर्ता के रूप में शिक्षक

Scanned with Cam

डी.एल.एड.प्रथम वर्ष

पूर्व बाल्यावस्था–परिचर्या एवं शिक्षा

Early Childhood Care and Education (Pre-Primary and Primary Education)

(प्रश्न पत्र – 3)

पूर्णांक अंक –100
बाह्य मूल्यांकन – 70
आंतरिक मूल्यांकन – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य –(Rationale and aim)

प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं उसकी शिक्षा विश्व में एक उच्च प्राथमिकता से उभरने वाले क्षेत्रों में से एक है। तंत्रिका विज्ञान (Neuro science) की नई शोध कहती है कि नब्बे प्रतिशत मस्तिष्क का विकास 5 साल की उम्र तक होता है और इस विकास पर न केवल पोषण एवं सेहत का असर होता है, बल्कि इन सालों में बच्चे को मिलने वाले मनोसामाजिक अनुभवों का भी गहरा असर पड़ता है। पहली पीढ़ी के सीखने वाले बच्चों की एक बड़ी संख्या अब विद्यालयी व्यवस्था में आ रही है। ये बच्चे ऐसे घरों से आ रहे हैं जहाँ सीखने का वातावरण अपर्याप्त है। इससे दुनियाभर में विद्यालय प्रारंभिक लिखने पढ़ने और गणित की दक्षताओं के बिना ही अगली कक्षा में पहुँच रहे हैं। एक महत्वपूर्ण कारक यह देखा गया है कि बच्चे स्कूल के लिए पर्याप्त तैयारी के बिना ही सीधे शाला में आ रहे है जबकि यह तैयारी उन्हें आवश्यक अवधारणात्मक एवं भाषात्मक आधार दे सकती है। शोध से यह बात उभरी है कि प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) यदि सही उम्र में मिले तो इस अंतर को काफी हद तक कम किया जा सकता है। प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) जो छः वर्ष तक की उम्र के लिए थी उसे अब दुनियाभर में जन्म से आठ साल तक की उम्र की देखभाल और शिक्षा के रूप में परिभाषित किया जा रहा है। इस तरह से प्राथमिक स्कूल के पहले दो से तीन साल भी इस में सम्मिलित है। इसके पीछे यह तर्क है कि बाल विकास के सिद्धांत के अनुसार छः से आठ साल के बच्चे अपने विकास लक्षणों और रूचियों में छोटे बच्चों से ज्यादा समानता रखते हैं और उनकी जरूरतें भी एक सी होती है। परिणामस्वरूप प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) में खेल और गतिविधि आधारित विधियाँ इनके लिए ज्यादा उपयुक्त होती है और इसके साथ यह कि शाला पूर्व प्राथमिक वर्षों को एक समान अवस्था में या एक इकाई के रूप में मिलाने से बच्चे के सीखने की प्रक्रिया को सतत् बनाए रखने में मदद मिलती है। इससे बच्चों की लचीले रूप से और अपनी गति के अनुसार सीखने की प्रक्रिया चल पाती है और औपचारिक रूप से सीखने की तरफ बढ़ना आसान हो जाता है। प्रारंभिक बचपन की शिक्षा में दो उप–अवस्थाएं सम्मिलित है–

पूर्व प्राथमिक अवस्था 3 से 6 साल–

प्राथमिक अवस्था या कक्षा 1 एवं 2 (6 से 8 साल) बच्चों के बेहतर मानसिक विकास एवं जीवन पर्यन्त सीखने तथा अपने आगामी जीवन में एक अच्छा नागरिक जो एक जिम्मेदार समाज की संरचना कर सके। बच्चे

के प्रारंभिक वर्षों मे हर चीज को अपनी तर्क शक्ति तथा जिज्ञासा से परखने की क्षमता को बढ़ाया जाये उसमें ऐसे गुणों का विकास किया जाये ताकि वह किसी बात को सीधे मनाने की बजाए उसकी उपयोगिता और महत्ता मे से सम्बधित प्रश्न करें और संतुष्ट होने पर ही उसे स्वीकार करे, ताकि वह भीड़ का हिस्सा न बने और उसमें नेतृत्व करने की क्षमता का विकास हो।

शिक्षक भी तभी अपनी शिक्षा देने की पद्धति से संतुष्ट हो जब बच्चा हर पाठ की समाप्ति पर या कक्षा के दौरान प्रश्न करें।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- जीवन पर्यन्त सीखने और विकास के आधार के रूप में प्रारंभिक बचपन के वर्षों की परिभाषा और महत्व को समझना।
- पूर्व, मध्य एवं पश्च बचपन के वर्षों में बालक के गुणों, विकास की जरूरतों के अनुसार संवेदनाओं का विकास करना और प्राथमिक शिक्षा में उसका क्रियान्वयन करना।
- विकास के संदर्भ में उपयुक्त प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) की पाठ्यचर्या और विद्यालयीन शिक्षा के लिए उसके महत्व एवं सिद्धांत व विधियों को समझना।
- प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) में घर पर रह कर सीखना (Home School) और समुदाय से जुड़ाव के महत्व को समझना।

3. इकाईवार अंक विभाजन–

सरल क्र.	इकाई का नाम	अंक
1	प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की परिभाषा प्रकृति एवं महत्व	20
2	विकास की दृष्टि से समुचित प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) पाठ्यक्रम के सिद्धांत और विधियाँ	20
3	बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की पाठ्यचर्या की योजना एवं प्रबंधन	15
4	बच्चों के प्रगति का आंकलन	15
	आंतरिक अंक	30
	कुल अंक	100

Scanned with Car

इकाई :1 प्रारंभिक बचपन में देखभाल एंव शिक्षा की परिभाषा प्रकृति एवं महत्व

(Definition, Nature and Significance of Early Childhood and Education)

- प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की समग्र पाठ्यचर्या की परिभाषा एवं उद्देश्य।
- जीवन पर्यन्त सीखने एवं विकास में प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) को महत्वपूर्ण अवधि के रूप में महत्व जानना।
- अधिगम को सुगम बनाने के लिए प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की अवधि को आठ साल की उम्र तक बढ़ाने संबंधी तर्क।
- विद्यालयों में प्रारंभिक अधिगम की चुनौतियाँ एवं शाला पूर्व तैयारी की अवधारणा।

इकाई : 2 विकास की दृष्टि से समुचित प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) पाठ्यक्रम के सिद्धांत और विधियाँ (Principles and Methods of Developmentaly Appropriate ECCE Curriculum)

- बच्चे कैसे सीखते हैं : प्रारंभिक, मध्य एवं बाद के बचपन तक अवस्थावार विशिष्टताएँ।
- प्रारंभिक वर्षों में सीखने के लिए खेल एवं गतिविधि आधारित शिक्षण का महत्व।
- 'बच्चों के समग्र विकास के क्षेत्र एवं गतिविधियाँ ।
- प्रारंभिक वर्षों में साक्षरता एवं अंक ज्ञान।

इकाई : 3 बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की पाठ्यचर्या की योजना एवं प्रबंधन

(Planning and Mannagement of ECCE Curriculum)

- सुगठित एवं संदर्भयुक्त पाठ्यचर्या की योजना के सिद्धांत
- दीर्घ एवं अल्पकालिक उद्देश्य एवं योजना
- परियोजना विधि एवं विशिष्ट कार्यक्षेत्र केन्द्रित उपागम (Approach)
- विकास की दृष्टि से उपयुक्त एवं समावेशी कक्षा प्रबंधन

इकाई : 4 बच्चों के प्रगति का आकलन (Assessing Children's Progress)

- प्रारंभिक बचपन में सीखने एवं विकास के मापदन्ड
- बच्चों की प्रगति का अवलोकन एवं उसका अभिलेखीकरण
- बच्चों की प्रगति का प्रतिवेदन
- घर और शाला के बीच जुड़ाव सुनिश्चित करना

Scanned with Ca

डी.एल.एड.प्रथम वर्ष

भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास

Understanding Language and Early Language Development

(प्रश्न पत्र–4)

पूर्णांक	–	50
वाह्य अंक	–	25
आंतरिक अंक	–	25

औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

भाषा केवल संचार या संप्रेषण का माध्यम नहीं है बल्कि ऐसा माध्यम है जिससे ज्ञान प्राप्त किया जाता है। यह एक ऐसी संरचना है जो हमारे आस पास की वास्तविकता को व्यवस्थित करके हमारे मस्तिष्क में इसे प्रस्तुत करती है, इसका प्रतिनिधित्व करती है। भाषा केवल भाषा की कक्षा तक ही सीमित नहीं होती, यह सभी दृष्टिकोणों, विषयों, गतिविधियों और संपूर्ण समाज में व्याप्त है। इसके महत्वपूर्ण पहलुओं के व्यवस्थित अध्ययन की आवश्यकता है।

इस प्रश्नपत्र का प्राथमिक उद्देश्य शिक्षकों को कक्षा में, बच्चों के घर में, समाज में और राष्ट्र में भाषा किस तरह परिचालित होती है, इस बारे में जागरूक करना है। भाषा की कक्षाओं में शिक्षण एवं निर्देशों के लिए योजना बनाते समय सिद्धांतों से जुड़ाव बनाए रखना भी इस प्रश्नपत्र का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि भाषा हम सभी के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। यह केवल संप्रेषण के लिए ही आवश्यक नहीं है बरन यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा विविध क्षेत्रों में ज्ञान हासिल किया जाता है। चिंतन, तर्क करना, निर्णय लेना आदि सभी कार्य भाषा के कारण ही संभव हो पाते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि हम कोई भी काम भाषा के जरिए और भाषा के साथ ही करते हैं। भाषा हमारे चारों ओर चल रही घटनाओं व बातों को स्वरूप देती है और फिर हमारे मस्तिष्क में इसे व्यक्त करती है।

इस प्रश्नपत्र का प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों को भाषा की कार्यप्रणाली को समझने में मदद करना है जैसे भाषा से क्या आशय है? भाषा के अंतर्गत क्या–क्या आता है? भाषा के कार्य क्या है? भाषा, विचार और समाज के बीच क्या संबंध है आदि।

Scanned with Car

विशिष्ट उद्देश्य : (Specific Objectives)

- भाषा की प्रकृति एवं संरचना से प्रतिभागियों को परिचित कराना।
- भाषा के कार्यों के प्रति जागरूक बनाना
- प्राथमिक कक्षाओं में स्कूली पाठ्यक्रम के वृहद परिप्रेक्ष्य में भाषा के महत्व, उसके अधिग्रहण तथा अधिगम को समझना।
- विभिन्न भाषाई कौशलों एवं उनके विकास के तरीकों को समझना
- भाषा, विचार एवं समाज के अंर्तसबंधों को समझना
- साहित्य की विभिन्न विधाओं की प्रकृति, उनके शिक्षण के उद्देश्य तथा अधिगम के तरीकों को समझना
- व्याकरण को पाठ्यवस्तु के साथ रचनात्मक तरीके से जोडते हुए पढ़ाने के तरीकों को समझना

अच्छा शिक्षण शास्त्र वही होता है जो विषय की प्रकृति, शिक्षार्थी और उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए संयोजित किया जाए।

इकाईवार अंको का विभाजन –

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	भाषा क्या है (What is Language)	2
2	2	भाषाई विविधता और बहुभाषिकता (Listening & Speaking)	2
3	3	भाषा अधिग्रहण और भाषा सीखना (Language Accquistion and Learning)	2
4	4	भाषा की कक्षा (Language Classroom)	2
5	5	भाषा कौशल क्या है (Developing Language Skills)	4
6	6	भाषाई कौशल का विकास (Developing Language Skills)	4
7	7	साहित्य (Literature)	3
8	8	पाठ्यपुस्तक एवं उसके शिक्षा शास्त्र की समझ (Understanding text book and Pedogogy)	3
9	9	कक्षा शिक्षण की योजना एवं आकलन (Classroom Planning and Evaluation)	3
		आंतरिक अंक	25
		कुल अंक	50

Scanned with CamScanner

इकाई 1 भाषा क्या है (What is language)

- परिचय
- भाषा, विचार और समाज
- पशु एवं मानव संप्रेषण के बीच अंतर
- भाषा की विशेषताएँ, भाषा के कार्य
- भाषा की संरचना
- भाषा और उसमें निहित शक्ति

इकाई 2 भाषाई विविधता और बहुभाषिकता (Liestenig & Speaking)

- भाषा के बारे में संवैधानिक प्रावधान
- बहुभाषिकता की प्रकृति और कक्षा में इसका प्रभाव
- भाषाई विविधता— भारत एवं मध्यप्रदेश के संबंध में
- बहुभाषिकता— कक्षा संसाधन और रणनीति के रूप में

इकाई 3 भाषा अधिग्रहण और भाषा सीखना (Language Accquistion and Learning)

- परिचय
- भाषा और बच्चे
- अधिग्रहण और सीखना
- प्रथम भाषा अधिग्रहण
- द्वितीय भाषा और विदेशी भाषाओं को सीखना

इकाई 4 भाषा की कक्षा (Language Classroom)

- परिचय
- भाषा शिक्षण के उद्देश्य (aims & objectives)
- भाषा शिक्षण के वर्तमान तरीके और उनका विश्लेषण
- शिक्षक की भूमिका
- त्रुटियों की भूमिका

Scanned with Car

इकाई 5 भाषाई कौशल क्या है (Developing language skills) (1)

- परिचय–
- सुनना– सुनने से तात्पर्य
- बोलना– बोलने से तात्पर्य
- सुनने और बोलने के कौशल का विकास– संवाद, लघु नाटक, कहानी सुनाना, कविता सुनाना

इकाई 6 भाषाई कौशलों का विकास (Developing language skills) (2)

- परिचय
- साक्षरता और पढ़ना–पढ़ने से तात्पर्य
- वर्णनात्मक पाठ्यवस्तु को पढ़ना– पाठ्यवस्तु को समझना, आलेख का विस्तार करना, पठित सामग्री को अपने अनुभव से जोड़ना, नए अनुभवों को आलेख में शामिल करना, पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त भी विविध सामग्री को पढ़ पाना
- पढ़ने की रणनीतियाँ– पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद की रणनीतियाँ
- भाषा के विविध साधनों की समझ, बच्चों को अच्छा पाठक बनाना
- लेखन एक कौशल?
- पढ़ने और लिखने के बीच का संबंध
- लेखन कौशल का विकास करना, मौलिक लेखन कर पाना
- साहित्य की विभिन्न विधाओं से सम्बधित साहित्यिक उदाहरण दिए जाएँ जिससे कि पढ़ाना आसान हो।

इकाई 7 साहित्य (Literature)

- पाठ्यपुस्तक के प्रकार– कथात्मक एवं वर्णात्मक साहित्य से परिचय, उन्हें पढ़कर समझना, पाठ्यवस्तु के साथ संबंध स्थापित करना
- साहित्य की विभिन्न विधाओं के शिक्षण के उद्देश्य
- साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़कर समझना
- संपूर्ण पाठ्यक्रम में साहित्य का प्रयोग कर पाना।
- गद्य एवं पद्य को पढ़ाने की विधियाँ– व्याकरण–रचनात्मक तरीके

Scanned with Ca

इकाई 8 पाठ्यपुस्तक एवं उसके शिक्षण शास्त्र की समझ (Understanding text book and pedogogy)

- भाषा की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत
- विषयवस्तु एवं उसके शिक्षण के तरीके
- पाठ्यपुस्तक मे दी गई विषयवस्तु, उसके शिक्षण के तरीके, इकाइयों की रूपरेखा, अभ्यास कार्य की प्रकृति और उसकी बारीकियों का विश्लेषण
- अकादमिक मापदंड और सीखने के तरीके
- भाषा की कक्षा में शिक्षण सहायक सामग्री

इकाई 9 कक्षा शिक्षण की योजना एवं आकलन (Classroom planning and evaluation)

- कक्षा शिक्षण की तैयारी– भाषा की कक्षाओं की वार्षिक एवं कालखण्डवार कार्ययोजना बनाना
- आकलन सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में अंतर (CCE)
- भाषा की कक्षा में रचनात्मक आकलन (पढ़ने–लिखने का आकलन)
- भाषा की कक्षा में योगात्मक आकलन (कौशल आधारित)

सत्रगत कार्य (Assignments)

निम्नलिखित खंड अ एवं ब में से एक–एक प्रयोजना कार्य कीजिए

खंड अ

- गतिविधि आधारित अधिगम (ए.बी.एल.)/सक्रिय अधिगम प्रविधि (ए.एल.एम.) की एक –एक पाठ योजना गद्य एवं पद्य की पृथक –पृथक तैयार कीजिए।
- भाषाई कौशलों के विकास हेतु एक प्रभावी पाठ योजना सहायक सामग्री सहित तैयार कीजिए।
- भाषा प्रयोगशाला के प्रत्यक्ष अवलोकनके अधार पर एक भाषाई खेल गतिविधि तैयार करे।
- भाषागत किसी एक समस्या का चयन कर क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोजना निर्माण कर संपादन कीजिए।
- भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए एवं मौखिक मूल्यांकन के लिए ब्लूप्रिंट के अनुसार किसी एक कक्षा का आदर्श प्रश्नपत्र तैयार कीजिए।

Scanned with Car

डी.एल.एड.प्रथम वर्ष

पाठ्यचर्या में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का एकीकरण

ICT integration across the Curriculum

(प्रश्न पत्र–6)

पूर्णांक : 100

बाह्य अंक : 50

आंतरिक अंक : 50

औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

वर्तमान समय में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने एवं सम्प्रेषण करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है, तथा सम्प्रेषण तकनीकी का पाठ्यक्रम में समेकन विषय अध्ययन के द्वारा छात्राध्यापकों की कम्प्यूटर अनुप्रयोग की समझ विकसित होगी। आई सी टी का उपयोग किस प्रकार किया जाए, इसकी समझ पैदा होगी। यह विषय उनकी शिक्षण–अधिगम की समझ को विकसित करेगा। इसका उपयोग वे शिक्षण कक्ष में कर सकेंगे। यह आशा की जाती है कि यह तकनीकी उनके तथा शिक्षण में अत्यन्त उपयोगी होगी।

इस विषय के अध्ययन का अन्य उद्देश्य यह है कि इससे छात्राध्यापकों में अनुसंधान विधियों की समझ विकसित होगी जिसका उपयोग वे बहुआयामी संदर्भों में कर सकेंगे। वे निम्नांकित कार्यों हेतु सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का उपयोग कर सकेंगे।

- दस्तावेज तैयार करने हेतु
- प्रस्तुतीकरण स्लाइड तैयार करने हेतु।
- सरल ग्राफिक्स बनाने के लिए
- शैक्षिक संदर्भों में उचित मुक्त शैक्षिक संसाधनों का उपयोग

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- स्कूल शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की आवश्यकता समझना।
- अधिगम प्रक्रियाओं में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के प्रयोग के माध्यम से अधिगम को प्रभावी बनाना।
- विषय में छात्र मूल्यांकन/आकलन हेतु विभिन्न सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी माध्यमों को बढ़ावा देना।

Scanned with Ca

- विभिन्न विषयों में उपलब्ध सूचना एवं तकनीकी सापटवेयर एवं टूल्स के उपयोग को बढ़ावा देना।
- उपलब्ध मुक्त शैक्षिक संसाधनों को उपयोग करना।
- शिक्षक को सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के उपयोगकर्ता के तौर पर योग्य, कुशल एवं संवेदनशील बनाना जिससे कि वह उचित समय पर उचित तकनीकी का प्रयोग कर सकें

इकाईवार अंको का विभाजन

क्र.	इकाई की संख्या	विषय का शीर्षक	अंक अधिभार
1.	1	स्कूल शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी आधार	15
2	2	सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	15
3	3	सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन/मूल्यांकन	10
4	4	विषय आधारित वेब साइट एवं सॉफ्टवेयर एवं उपयोग	10
आंतरिक अंक			50
कुल अंक			100

इकाई–1 स्कूल शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी आधार

शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी– परिभाषा, अर्थ एवं भूमिका

- शिक्षा में कम्प्यूटर
  हार्डवेयर– डाटा स्टोरेज, डाटा बैकअप
  सॉफ्टवेयर–सिस्टम सॉफ्टवेयर (विंडोस, लिनेक्स, एन्ड्रोइड), एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर (वर्ड, पावरपॉइंट, एमएस एक्सेल)
- इंटरनेट और इंट्रानेट– खोज करना, चयन करना डाउनलोड करना, अपलोड करना
- दस्तावेज निर्माण और प्रस्तुतीकरण– टेक्स्ट दस्तावेज निर्माण, स्प्रेडशीट निर्माण, पावरपॉइंट निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण (स्लाइड, चार्ट, कार्टून, चित्र के साथ)
- मुक्त शैक्षिक संसाधन (ओईआर)– अर्थ, उद्देश्य एवं महत्व नेशनल रिपोजीटरी ऑफ ओईआर

Scanned with Ca

ओईआर फॉर स्कूल्स– एचबीसीएसई, टीआईएफआर, एमकेसीएल एवं आई–कॉन्सेंट का संयुक्त प्रयास अन्य जैसे– स्कूल फार्ज, ओपेन सोर्स एजुकेशन फाउंडेशन, नेशनल सेंटर फॉर ओपेन सोर्स एंड एजुकेशन तथा फ्लॉसएड. ऑर्ग

इकाई–2 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

- मस्तिष्क आधारित अधिगम (बीबीएल)
- ई–लर्निंग एवं ब्लैंडेड लर्निंग
- एल 3 समूह रचना, कापरेटिव एवं कोलोब्रेटीव अधिगम
- फ्लिप्ड एवं स्मार्ट क्लासरूम, इंटरैक्टिव व्हाइट बोर्ड
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी समर्थित अधिगम के वैकल्पिक तरीके– पैकेज (काई/ सीएएल पैकेज, मल्टीमीडिया पैकेज, ई–कंटैंट, एमओओसी), सोशल मीडिया (मोबाइल, ब्लॉग, विकि, व्हाट्सएप, चैट आदि)
- आभासी प्रयोगशाला (वर्चुअल लैब)– अर्थ एवं भूमिका
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित अधिगम संसाधन निर्माण (एडुकाप्से आदि द्वारा)

इकाई–3 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन/मूल्यांकन

- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी समर्थित आंकलन/मूल्यांकन के वैकल्पिक तरीके– ई–पोर्टफोलियो, कम्प्यूटर आधारित प्रश्न बैंक आदि)
- आकलन रुब्रिक के निर्माण के लिए ऑनलाइन रुब्रिक जेनेरेटर जैसे– आरयूबीआईएसटीएआर, आईआरयूबीआरआईसी
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन/मूल्यांकन टूल (एसओसीआरएटीआईवीई, पीआईएनजीपीओएनजी, सीएलएएसएस मीएडीजीईएस, सीएलएएसएसएमकेईआर आदि)
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित परीक्षण निर्माण टूल्स (एचओटीपीओटीएटीओ, एसयूआरवीईवाईएमओएनकेईवाई, जीओओजीएलई एफओआरआरएम आदि)

इकाई–4 विषय आधारित वेब साइट एवं सॉफ्टवेयर एवं उपयोग

- भौतिक विज्ञान आधारित– फीजिऑन, ब्राइट स्टोर्म, कॉम, नासा वर्ल्ड वाइड
- रसायन विज्ञान आधारित– पिरियोडिक टेबिल क्लासिक, कलजिअम
- मेथ्स आधारित– जियो जेब्रा, मेथ्सइसफन, सेज मेथ्स, खानएकदेमी, ओआरजी, ट्रक्स मेथ्स
- समाज विज्ञान आधारित– सेलास्टिया, जी कॉम्परिस, वर्ल्ड वाइड टेलेस्कोप, जी कोम्प्रिस,

Scanned with Cal

Proficiency in English

(D.El.Ed First year)

Question Paper -6

Maximum Marks : 50

External : 25

Internal : 25

Rationale and Aim -

The purpose of this course is to enable the student-teachers to improve their proficiency in English. A teacher's confidence in the classroom is often Undermined by a poor command of the English language. Research has shown that improving teachers efficiancy, or one's own belief in one's effectiveness, has a tremendous impact on the classroom teaching who perceives oneself as a proficient in English and more likely to use communicative strategies for teaching English. The Teacher is less likely to resort to using simple translation or guide-books for teaching English.

This course focuses on the receptive (listening and reading) and productive (speaking and writing) skills of English and combines within each of these, both an approach on proficiency in usage in classroom teaching.

SPECIFIC OBJECTIVES

- To strengthen the student-teacher's own English language proficiency.
- To brush up their knowledge of grammatical, lexical and discourse systems in English.
- To enable students to link this with pedagogy.
- to re- sequence units of study for those who may have no knowledge of English.

Scanned with Ca

This Course will attempt to use a variety of resources, talks and activities to enable the student-teacher to develop/increase their proficiency in English. The Focus will not be on learning and memorizing aspects of grammar and pure linguistics only. Instead, the aim will be to enjoy learning English and to constantly reflect on this learning and also link it with pedagogical strategies.

Unit-wise division of marks

Unit S. No.	Unit Name	Marks
1.	Status of English in India	2
2.	Listening & Speaking	4
3.	Reading	6
4.	Writing	8
5.	Vocabulary & Grammar	5
	Internal Marks	25
	Total Marks	50

Unit 1- Status of English in India

- English as a global language
- English as a Language of Science & Technology.
- English as a library language.

Unit 2- Listening & Speaking.

- Phonetics and phonology- How sounds are produced, transmitted and received; stress, rhythm and intonation in pronuciation.

Unit 3- Reading.

- Importance of reading
- Reading strategies – word attack, inference, extrapolation

Scanned with Cal

Unit 4- Writing.

- Mechanics of writing-strokes and curves, capital and small letters, cursive and print script, punctuation.
- Different forms of writing- formal and informal letters, messages, notices, posters, advertisements, note making, report writing, diary entry, resume (bio data/CV) writing.
- Controlled and guided writing with verbal and visual inputs
- Free and creative writing.

Unit 5- Vocabulary & Grammar in context

- Synonyms, antonyms, homophones.
- Word formation- prefix, suffix, compounding
- Parts of speech
- Tense, modals
- Articles, determiners
- Types of sentences (assertive, interrogative, imperative, exclamatory)

Mode of Transaction

The teaching would be done on the basis of

(a) Group work

(b) Work shop

(c) Seminar

(d) Actual classroom teaching.

Assignment

Put the internal assessment activities at one place and let the learners do any 5

Suggested Activities for Active learning-

- Group discussions,
- Speech, debate

Scanned with Car

डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

योग शिक्षा

Yoga Education

(प्रश्नपत्र–7)

पूर्णांक– 50

वाह्य अंक – 25

आंतरिक अंक– 25

औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

आज मानव के ज्ञान में अपार वृद्धि के साथ–साथ तीव्र गति से अनेकानेक सामाजिक परिवर्तन हो रहे है। आधुनिक विज्ञान तथा प्राद्यौगिकी ने जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। वैज्ञानिकों ने प्रकृति के सूक्ष्म रहस्य को जानने में सफलता प्राप्त कर ली है। आज व्यक्ति के पास अनेकानेक सुख सुविधाओं के साधन उपलब्ध है, लेकिन दु:ख की बात यह है कि धीरे–धीरे स्वास्थ्य खोता जा रहा है। शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़ा मानसिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य होता है। यह सब उत्तम हो इसके लिए शरीर का संचालन जरूरी है। योग से तन के साथ मन भी स्वस्थ होता है।

डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम में शामिल करने का औचित्य यह है कि शालेय स्तर पर आसन और प्राणायाम को करवाया जाये । जिससे बच्चों में एकाग्रता, ध्यान केन्द्रण के साथ–साथ शारीरिक स्वास्थ्य बन सके।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objective)

1. छात्र–शिक्षकों में जीवन की गुणवत्ता विकसित करने के लिए योग व्यवहारों के सिद्धान्तों की समझ पैदा करने हेतु।
2. उचित योग आसन को प्रदर्शित करने की योग्यता विकसित करना जिससे शारीरिक व मानसिक दशा विकसित हो और भावनात्मक संतुलन बना रहे।
3. युवाओं की मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को विकसित करने में मदद करना, जैसे जागरुकता, एकाग्रता एवं इच्छा शक्ति।
4. युवाओं में सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना।
5. भारतीय संस्कृति के उन व्यवहारों के लिए सम्मान विकसित करना जो अर्थपूर्ण एवं प्रासंगिक शैक्षिक रणनीतियों का समर्थन करती हैं।
6. आदर्श सामाजिक कौशल एवं ताकत का विकास करने के लिए अवसरों का निर्माण करना।

Scanned with Ca

7. योग दर्शन की दार्शनिक अवधारणाओं के बारे में एक व्यापक विचार विकसित करना।

8. मानव जीवन के लिए योग की अवधारणा एवं व्यवहार व उसके आशय को समझना।

9. योग की अवधारणा को समझना व योग के विभिन्न सिद्धान्तों को व्यवहार में प्रदर्शित करना।

10. पतञ्जलि, अरबिन्दो व भागवद्गीता के योग सिद्धान्तों के विषय में एक अन्तरदृष्टि विकसित करना।

11. योग व्यवहार के उपचारात्मक महत्त्व के बारे में एक सम्पूर्ण विचार प्राप्त करना।

12. योग सिद्धान्त एवं इसकी आध्यात्मिक पवित्रता के बारे में अन्तरदृष्टि प्राप्त करना।

इकाईवार अंको का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	योग का परिचय (Introduction to Yoga)	5 अंक
2	2	पतञ्जलि के समय और पंतजलि के पश्चात योग का विकास (Patanjali Yoga and post patanjali developments)	5 अंक
3	3	योग एवं ध्यान की अन्य महत्वपूर्ण प्रणालियां (Other Important system of Yoga and meditation)	7 अंक
4	4	शरीर रचना विज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव (Effect of yoga on Physilogy and mental health)	8 अंक
		आंतरिक अंक	25
		कुल अंक	50

इकाई–1 योग का परिचय (Introduction to Yoga)

- योग का अर्थ एवं परिभाषा, योग का क्षेत्र, योग के उद्देश्य, योग के प्रकार (भक्ति योग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, हठयोग, मन्त्रयोग, लययोग, कुण्डलिनी योग), योग व व्यायाम में अन्तर, योग के पूरक व्यायाम– सूक्ष्म यौगिक क्रियायें, शिक्षक एवं विद्यार्थियों के लिए योग का महत्व।
- योग का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य– पतञ्जलि से पूर्व में योग की स्थिति (सिन्धु घाटी की सभ्यता, वैदिककाल, उपनिषदकाल, रामायणकाल महाभारतकाल) सांख्य और योग, जैन धर्म एवं योग बौद्ध धर्म एवं योग।

Scanned with Ca

इकाई–2 पतञ्जलि के समय और पतंजलि के पश्चात योग का विकास

(Patanjali Yoga and post patanjali developments)

- महर्षि पतञ्जलि द्वारा योग का सुव्यवस्थीकरण, अष्टांग योग का परिचय–नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, महर्षि पतञ्जलि का योग के क्षेत्र में योगदान।
- पतञ्जलि के पश्चात योग का विकास– योग के विभिन्न ग्रंथों का सामान्य परिचय–योगसूत्र, घेरण्डसंहिता, हठयोग प्रदीपिका, आधुनिक युग में योग का पुर्नजागरण।
- योग के क्षेत्र में विभिन्न योग संस्थाओं का योगदान जैसे– कैवल्यधाम लोनावाला, बिहार योग विद्यालय मुंगेर, स्वामी विवेकानन्द योग अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर, दिव्य जीवन संघ शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश, मोरार जी देशाई राष्ट्रीय योग अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली, केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली, पतञ्जलि योगपीठ हरिद्वार।

इकाई–3 योग एवं ध्यान की अन्य महत्वपूर्ण प्रणालियाँ

(Calucation and other Important system of Yoga and meditation)

- ध्यान का अर्थ, प्रकार एवं लाभ, ध्यान में उपयोगी एवं बाधक तत्व।
- पंचकोष की अवधारणा, भगवद्गीता और योग, ध्यानयोग– (गीता, अध्याय 6 में वर्णित श्लोक संख्या 10 से श्लोक संख्या 36 तक की व्याख्या) जप ध्यान, अजपाध्यान, पतञ्जलि के आधार पर ध्यान पद्धति।
- प्रेक्षा ध्यान अर्थ और उद्देश्य, विपश्यना ध्यान का अर्थ और उद्देश्य।

इकाई–4 शरीर रचना विज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव

(Effect of yoga on Physilogy and mental health)

- शारीरिक तन्त्रों पर योग का प्रभाव परिसंचरण तन्त्र, कंकाल तन्त्र, पाचन तन्त्र, श्वसन तन्त्र, तन्त्रिकातन्त्र, उत्सर्जन तन्त्र।
- अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ का परिचय एवं उन पर योग का प्रभाव।
- मानसिक स्वास्थ्य, चिन्ता, अवसाद, तनाव कम करने में योग की भूमिका।

सत्रगत कार्य –

योग अभ्यास और गतिविधियाँ **(Practium and Suggested Activities)** कोई 3 किये जायेगें

1. योग केन्द्र का भ्रमण करना और केन्द्र में आयोजित गतिविधियों पर आधारित प्रतिवेदन लिखना।

Scanned with Ca

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

हिन्दी भाषा शिक्षण

Hindi Language Teaching

(प्रश्न पत्र– 8)

पूर्णांक अंक –100

बाह्य मूल्यांकन–70

आंतरिक मूल्यांकन–30

1. औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim):–

भाषा संप्रेषण का माध्यम है, ज्ञान प्राप्त करने का साधन है। यदि कही कोई विचार देना होता है। तो उसके लिये भाषा की आवश्यकता होती है और यदि वह अपनी भाषा दें तो खुलकर अभिव्यक्ति हो पाती है। देश की आबादी का बहुत बड़ा भाग हिन्दी भाषा का उपयोग करता है। हिन्दी भाषा शिक्षण का उद्देश्य परिवार, समाज और राष्ट्र में अच्छी भाषा का संचालन होता है। हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशलों का विकासकरना व्याकरण संबंधी जानकारियाँ देना। इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य है। भाषा के मूल तत्वों को प्रकृति को जानकर छात्राध्यापक अपनी पाठ्योजना तैयार कर सकें, शुद्ध बोलना, शुद्ध वाचन बच्चों को सिखा सकें, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये हिन्दी भाषा शिक्षण को डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं संरचना से छात्राध्यापकों को परिचित कराना।
- स्कूली पाठ्यक्रम के वृहद परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा के महत्व, उसके अधिग्रहण तथा अधिगम को समझना।
- हिन्दी भाषा के विभिन्न कौशलों एवं उनके शिक्षण के उद्देश्य तथा अधिगम के तरीकों को समझना।
- हिन्दी भाषा की विषयवस्तु में व्याकरण के रचनात्मक प्रयोग करना।

Scanned with Ca

इकाईवार अंको का विभाजन

सरल क्र.	इकाई	इकाई का नाम	अंक
1	1	हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य और कक्षा प्रतिक्रिया	13
2	2	हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशल	12
3	3	भाषा शिक्षण के कौशल	12
4	4	गद्य और पद्य शिक्षण	13
5	5	व्यावहारिक व्याकरण	10
6	6	मूल्यांकन	10
आंतरिक अंक			30
कुल योग			100

इकाई 1 हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य और कक्षा प्रतिक्रिया

- हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य
- माध्यम भाषा/ प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी का स्वरूप
- हिन्दी भाषा का अधिग्रहण और उस संदर्भ में कक्षा की प्रतिक्रिया
- शिक्षण की भूमिका

इकाई 2 हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशल

- सुनना और इस कौशल से क्या आशय है।
- हिन्दी भाषा की कक्षा में सुनना कौशल का विकास संबंधी गतिविधियाँ
- बोलने के कौशल का आशय
- हिन्दी भाषा कक्षा में बोलना कौशल के विकास के लिए गतिविधियाँ (गीत, कविता, संवाद, संभाषण, विडियो, सिनेमा)

इकाई 3 भाषा शिक्षण के कौशल

Scanned with Ca

- पढ़ना कौशल से तात्पर्य
- हिन्दी भाषा कक्षा मे पढ़ने के कौशल से संबधित गतिविधियाँ –विषयवस्तु का वाचन, वाचन पश्चात अपने अनुभव से जोड़ना–1 विभिन्न प्रकार की पठनीय सामग्री का वाचन कर उसका आनंद उठाना।
- हिन्दी भाषा की कक्षा मे पढ़ने के कौशल विकास के लिए रणनीति – पढ़ने के पूर्व और पढ़ने के बाद की गतिविधियाँ।
- लेखन के कौशल से तात्पर्य
- हिन्दी भाषा की कक्षा में लेखन कौशल के विकास के लिए गतिविधियाँ।

इकाई 4 गद्य और पद्य शिक्षण

- गद्य और पद्य शिक्षण के उद्देश्य
- हिन्दी भाषा की कक्षा, लेख, व्यंग, निबंध आदि शिक्षण की पाठ योजना बनाना और कक्षा की प्रतिक्रिया।

इकाई 5 व्यावहारिक व्याकरण

- कक्षा के स्तरानुरूप व्याकरण तत्व का रचनात्मक पद्धति से शिक्षण
- व्याकरण के खेल/गतिविधि

इकाई 6 मूल्यांकन

- हिन्दी भाषा कक्षा का रचनात्मक मूल्यांकन
- हिन्दी भाषा की कक्षा में योगात्मक मूल्यांकन
- आकलन/मूल्यांकन का रख–रखाव, टीप लिखना, फीडबैक

सत्रगत कार्य (Assignments) कोई तीन प्रायोजना कार्य कीजिए–

1. सुनना कौशल पर आधारित ऑडियो तैयार करना जिसमे विभिन्न प्रकार की आवाजो को पहचानना, किसी के व्याख्यान को समझना, उस पर आधारित प्रश्नो के उत्तर लेना।
2. पढ़ना एवं लिखना कौशल पर आधारित पाठयोजना तैयार करना।
3. किसी एक कथा की भाषा की पाठ्यपुस्तक की समीक्षा करना।
4. स्थानीय स्तर पर प्रचलित लोकोक्तियो एवं मुहावरों का संकलन करना।
5. किसी स्थानीय स्थल के भ्रमण पर प्रतिवेदन तैयार करना।
6. बच्चों को व्याकरण सिखाने के ICT का प्रयोग करते हुए तीन हिन्दी भाषाई खेल तैयार करे

Scanned with CamScanner

Pedagogy of English Language
First year
(For primary)
(Question Paper - 9)

Maximum Marks : 100

External : 70

Internal : 30

(Rationale and Aim) :–

This Course focuses on the teaching of English to learners at the elementary level. The aim is also to expose the student-teacher to contemporary practices in English language Teaching (ELT). The course also offers the space to critique existing classroom methodology for ELT.

The theoretical perspective of this course is based on a constructivist approach to language learning. This course will enable the student-teacher to create a supportive environment which encourages their learners to experiment with language learning. The course will also focus on developing an understanding of second language learning.

Specific Objective

- Equip student-teachers with a theortical perspective on English as a "Second Language"(ESL)"
- Enable student-teachers to grasp general principles in language learning and teaching.
- To understand young learners and their learning context.
- To grasp the principles and practice of unit and lesson planning for effective teaching of English.

Scanned with Ca

- To develop classroom management skills; procedures and techniques for teaching language.
- To Examine and develop resources and materials and there usage with young learners for language teaching and testing.
- To examine issue in language assessment and their impact on classroom teaching.

The Course is designed to be very practical in nature and includes equipping the student-teacher with numerous teaching ideas to try out in the classroom. Of course, all practical ideas must be related to current theory and best practice in the teaching of young learners. It is important to make a constant to make a constant theory-practice connection for the student-teachers.

Unit-wise division of marks

Unit S. No.	Unit Name	Marks allotted
1.	Teaching of English at the elementary level	10
2.	Approaches to teaching of English	15
3.	Classroom transaction process	15
4.	Curriculum, text book & Material development	15
5.	Planning & Assesment	15
Internal Marks		30
Total		100

The theory paper will comprise of the five units-

Unit 1- Teaching of English at the Elementary level

- Issues of learning English in a multilingual' multicultural society.

- Issues of teaching Engliish as second language at (a) Early primary- class I and II, (b) Primary- class III, IV and V.
- Learner socio-Cultural background and need learning English

Unit 2- Understanding of Textbooks and Approaches to the Teaching of English

- The cognitive and constructive approach-nature and role of learner, catering to different types of learners, age, of learning, learning style, teaching large classes, socio-cultural pace factors and socio-psychological factors
- Behaviouristic approach- direct method, grammar- translation method, structural, approval, communicative approach, state specific methods- Activity Based Learning (ABL) and Active learning Methodology (ALM)

  The internal assessment will be done on the following two sub-sections

Unit 3- Classroom transaction process.

- Stating learning outcomes and achieving them
- Pair work, group work
- Use of story telling, role play, drama, songs as pedagogical tools.
- Pre-reading, reading and Post-reading, objectives and procsses.
- Questioning to promote thinking.
- Dealing with textual exercises.

  The internal assessment will be done on the following section-

A. **Preparing teaching plan (five) using constructive approch and including at least three of the following activities:**

   (i) pair work

   (ii) group work

   (iii) story telling

   (iv) role-play

   (v) drama

   (vi) songs/rhymes

   (vii) questioning to promote thinking.

Scanned with Car

B. **Peer analysis of the lession plan**

C. **Suggested ICT activities**

- Searching and downloading lesson plan based on constructivist approch
- Edit, moderate and contextalize at least one leasson plan.
- Present lesson plan digitally (on LCD projection or on smartphone)

Unit 4- Curriculum, textbook and material development.

- Preparing material for young learners.
- Using local resources.
- Using open resource (OER's) text, video, audio
- Analyzing and receiving teaching- learning materials and OER's.
- Academic standards, learning indicators and learning outcomes.
- Need and process of curriculum revision
- Text analysis of school textbooks for English

Unit 5- Planning & Assessment

- Planning for teaching
- Year plan, unit plan and period plan.
- Teachers' reflection on their own teaching learning practices
- Continuous and comprehensive evaluation (CCE)
- Monitoring of learning and giving feed back

Mode of transaction

The teaching would be done -

(a) Group work

(b) Work shop

(c) Seminar & actual classroom teaching.

Assignment

- Reading Passages and analyzing the distribution of linguistic elements.
- Making generalization on syntactic and morphological properties.

Scanned with Cam

डी.एल.एड.

प्रथम वर्ष – गणित शिक्षण

(पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक के लिए)

Pedagogy of Mathematics Education (for Early Primary and Primary School)

(प्रश्न पत्र –10)

पूर्णांक –100

बाह्य अंक – 70

आन्तरिक अंक – 30

औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim) :–

एक शिक्षार्थी गणित भाषा, संकेतों का इस्तेमाल उस समय शुरु करता है जब वह व्यवस्थित रूप में गणित का अध्ययन शुरु करता है। इसके अलावा जब उन्हें कक्षा में गणितीय अवधारणाएं सिखाई जाती है तो उनमें अमूर्त चिंतन, सामान्यीकरण, अनुमान लगाना, मात्रा निर्धारण, तर्क के गणितीय तरीकों की समझ विकसित होना चाहिए। एक शिक्षक को अवधारणात्मक ज्ञान के साथ इन प्रक्रियाओं, पढ़ाने के तरीकों और गणित सीखने के अन्य आयामों की जानकारी होनी चाहिए। यह कोर्स गणित के मूलभूत कार्यक्षेत्रों पर एक गहरी दृष्टि डालता है जो बीजगणितीय चिंतन, स्थान की समझ (Visualization of Space) संख्या बोध और आँकड़ों का प्रबंधन (Data Handling) आदि के विकास के लिए आवश्यक है।

दशकों से गणित प्राथमिक स्कूलों में अनिवार्य विषय रहा है। लेकिन अभी तक बच्चों के जीवन में यह कोई उल्लेखनीय स्थान नहीं बना पाया है। बच्चों को स्कूल के पहले के अपने गणित के ज्ञान को कक्षा में पढ़ाये जाने वाले व्यवस्थित गणित से जोड़ने में दिक्कत होती है और अन्त में एक विरोधाभास पैदा हो जाता है। इसे रोकने के लिए शिक्षकों को ना सिर्फ गणित की समझ होनी चाहिए बल्कि बच्चों द्वारा गणित सीखने की प्रक्रिया की भी जानकारी होनी चाहिए। इस कोर्स से जुड़ने से ऐसे भावी शिक्षकों का निर्माण होगा जो ऐसी वैकल्पिक शिक्षण पद्धतियों से अवगत होंगे, जो विषय के प्रकृति और बच्चों की सीखने की प्रक्रिया के अनुरूप हों। यह पेपर उन्हें इस बात के लिए तैयार करेगा कि वे पढ़ाने के दौरान बच्चों के पूर्व गणितीय ज्ञान का इस्तेमाल करते हुए व उनकी गलतियों को समझते हुए कार्य कर सकें और इस तरह बच्चों के दिमाग में उस अन्तर को भरने में सहायता कर उन्हें स्वतंत्र चिन्तन के लिए प्रोत्साहित कर सकें।

स्कूल आने से पहले ही बच्चे गणित से परिचित हो चुके होते हैं और अपनी तरह से उसका प्रयोग भी कर रहे होते हैं। स्कूल में उनका सामना गणित के व्यवस्थित रूप से होता है जो प्रायः गणित के ज्ञान की

Scanned with Ca

उनकी अपनी आन्तरिक प्रक्रिया के विरोध में खड़ा हो जाता है। प्रभावी शिक्षण के लिए यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षकों को इस विरोधाभास और अन्तर की समझ होनी चाहिए।

राष्ट्रीय फोकस समूह के आधार पत्र गणित शिक्षण (एनसीईआरटी, 2006) के अनुसार "गणित शिक्षा, शिक्षक की अपनी तैयारी, उसकी अपनी गणित की समझ, गणित के शिक्षा शास्त्रीय स्वभाव की समझ तथा उसकी अपनी अध्यापन–विधा की तकनीकों पर बहुत हद तक निर्भर करता है।" प्रत्येक शिक्षक को गणित की अपनी समझ को नये तरीके से विकसित करने की जरूरत होती है जो बच्चों के दिमाग में चल रही सीखने की प्रक्रिया को समझ सके और उसे अपना प्रस्थान बिन्दु बना सके। शिक्षकों को उन तरीकों के बारे में पता होना चाहिए जिन तरीकों से बच्चे सोचते हैं, जिससे वे अपनी शिक्षण विधि को इस तरह मोड़ सकें कि वह बच्चे के गणितीय ज्ञान की वैकल्पिक अवधारणाओं से अपना सामंजस्य बिठा सकें।

इस कोर्स का उद्देश्य भावी शिक्षकों को इस तरह संवेदनशील बनाना है कि वे न सिर्फ प्राथमिक स्तर पर पढ़ाए जाने वाले गणित के विषय के अपने ज्ञान का चिंतन कर सकें, बल्कि बच्चों और उनके अनुभवों से अपने आप को जोड सकें। इस कोर्स से जुड़ने से भावी शिक्षक इस योग्य हो सकेंगे कि वे बच्चों और उनकी गणित शिक्षा के बारे में शोध में कही गई चीजों से सीख सकें और उस पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकें तथा सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए इसका इस्तेमाल कर सकें।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

छात्राध्यापकों को

- प्राथमिक स्तर के गणित के विषय क्षेत्र पर अपनी गहरी समझ विकसित करने योग्य बनाना।
- उन घटकों के प्रति जागरूक करना जो गणित सीखने की प्रक्रिया पर प्रभाव डालते हैं।
- उन तरीकों के बारे में संवेदनशील बनाना जिन तरीकों से छात्र गणितीय ज्ञान के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।
- कौशल विकास, गहरी अन्तर्दृष्टि पैदा करने, उपयुक्त सोच हासिल करने एवं बच्चों के प्रभावी तरीके से सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए कारगर रणनीतियों की समझ विकसित करने में मदद करना।
- अर्थपूर्ण तरीके से गणित सीखने और पढ़ाने के लिए आत्मविश्वास का निर्माण करना।
- मुख्यतः संख्या और स्थान (space) से सम्बन्धित गणितीय अवधारणाओं और पढ़ाने के दौरान बच्चों के साथ इसका प्रयोग करने के कौशल और समझ को विकसित करना।
- गणितीय तरीके से सोचने और तर्क कर सकने के योग्य बनाना।
- अवधारणाओं को उसकी तार्किक परिणति तक ले जा पाये और कक्षा में छात्रों के साथ इसका प्रयोग कर पाने योग्य बनाना।
- बच्चों के लिए उचित गतिविधियों को डिज़ाइन कर सकने के ज्ञान एवं कौशल में समर्थ बनाना।

Scanned with Car

ये इकाइयाँ इस तरह बनाई गई है कि भावी शिक्षकों को यह समझने में मदद मिले कि छात्रों का सीखना इस बात पर निर्भर करता है कि शिक्षक ने विषयवस्तु को कैसे सीखा है और बच्चे किस तरह गणितीय ज्ञान को ग्रहण करते व प्रतिक्रिया देते हैं।

इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	गणित से परिचय (Introduction to Mathematics)	10
2	2	गणित शिक्षण सिद्धांत और शिक्षण विधियां (Mathematics Teaching Principles and Teaching Method)	15
3	3	गणना, संख्याएं एवं उनकी संक्रियाएं (Counting, Numbers and its Operations)	10
4	4	ज्यामितिय आकार एवं पैटर्न (Geometrical Shapes and Pattern)	10
5	5	पाठ्यपुस्तकों और शिक्षा शास्त्र की समझ (Understanding of Text book and Pedagogy)	15
6	6	कक्षा योजना एवं आकलन (Classroom Planning and assisment)	10
		आंतरिक अंक –	30
		कुल अंक –	100

इकाई 1 : गणित से परिचय (Introduction to Mathematics)

- गणित क्या है और जीवन में यह कहाँ–कहाँ है?
- हम गणित क्यों पढ़ाते हैं?
- दैनिक जीवन में गणित की क्या आवश्यकता व महत्व है?
- गणित के आयाम : अवधारणा, प्रक्रिया, प्रतीक व भाषा।
- गणितीकरण।

इकाई 2 : गणित– शिक्षण सिद्धान्त और शिक्षण विधियाँ

(Mathematics Teaching Principles and Teaching Method)

- सीखने वाले को समझना
- सीखने की प्रक्रिया को समझना
- सीखने एवं शिक्षण की त्रुटियाँ

Scanned with Cal

- गणित सीखने एवं सिखाने की विधियाँ– आगमनात्मक और निगमनात्मक (Induction and Deduction), विशिष्टीकरण एवं सामान्यीकरण, गणित के सिद्धान्त

इकाई 3 : गणना, संख्याएँ एवं उनकी संक्रियाएँ (Counting, Numbers and its Operations)

- संख्या–पूर्व अवधारणाएँ।
- संख्या की समझ एवं प्रस्तुति।
- अंक और संख्या।
- गणना और स्थानीयमान।
- भिन्न की अवधारणा और उसकी प्रस्तुति।
- संख्याओं और गणितीय संक्रियाएँ।

इकाई 4 : ज्यामितीय आकार एवं पैटर्न (Geometrical Shapes and Pattern)

आकृतियों के प्रकार– द्विविमीय एवं त्रिविमीय (2 डी और 3 डी)।

- आकृतियों की समझ– परिभाषा, आवश्यकता और अन्तर।
- गणित में विभिन्न आकारों की समझ।
- पैटर्न– परिभाषा, आवश्यकता और प्रकार।
- संख्याओं और आकृतियों में पैटर्न की समझ।

इकाई 5 : पाठ्यपुस्तकों और शिक्षा शास्त्र की समझ (Understanding of Text book and Pedagogy)

गणित की पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए दार्शनिक और मार्गदर्शी सिद्धान्त।

- गणित शिक्षण के लिए विषयवस्तु, दृष्टिकोण तथा विधि– संवादमूलक और सहभागी तरीका, एक सुविधादाता के रूप में शिक्षक।
- विषय (Theme), इकाई की संरचना, अभ्यास की प्रकृति और उसके प्रभाव।
- अकादमिक मानक और सीखने के संकेतक।
- गणितीय पाठ्यचर्या के प्रभावी अंतरण (transaction) के लिए अधिगम स्त्रोत (Learning Resources)।

Scanned with CamScanner

इकाई 6 : कक्षा योजना एवं आकलन (मूल्यांकन) (Classroom Planning and assisment)

- शिक्षण तैयारी : गणित शिक्षण के लिए योजना, वार्षिक योजना, इकाई योजना और कालखंड योजना।
- योजना का आकलन (मूल्यांकन)।
- आकलन व मूल्यांकन – परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आकलन (CCE)– अधिगम के लिए आकलन, अधिगम का आकलन, रचनात्मक आकलन एवं उपकरण, योगात्मक आकलन, भारिता टेबल (वेटेज टेबल), पृष्ठपोषण एवं रिपोर्टिंग, रिकार्ड एवं रजिस्टर।

सत्रगत कार्य (Assignments)

सत्रगत कार्य अंतर्गत छात्राध्यापक पूरी प्रक्रिया का अभिलेखीकरण कर सामग्री सहित प्रस्तुत करेंगे। (कोई दो)

1. एबाकस का निर्माण तथा इसका कक्षा शिक्षण में उपयोग करना।
2. ज्यो (GEO) बोर्ड का निर्माण एवं कक्षा–शिक्षण में इसका उपयोग करना।
3. संख्या रेखा के मॉडल का निर्माण व इसके द्वारा शिक्षण ।
4. कागज को मोड़कर गतिविधियों से गणित शिक्षण करना।
5. भिन्न डिस्क का निर्माण एवं दशमलव की समझ हेतु कक्षा शिक्षण में उपयोग करना।
6. घन के क्षेत्रफल हेतु मॉडल तैयार कर उसका सत्यापन करना।
7. पाइथागोरस प्रमेय का मॉडल तैयार कर उसका सत्यापन करना।
8. गणित की किसी एक अवधारणा के मूल्यांकन हेतु उपकरण का निर्माण कक्षा में उपयोग करना।
9. बच्चों को आने वाली कठिनाई की पहचान कर कारणों का विश्लेषण व निराकरण करना।
10. इंटर्नशिप की शाला मे गणितीय कोने (Maths Corner) की स्थापना करना।
11. अपने परिवेश से विभिन्न गणितीय पहेलियाँ/खेल का संग्रह करना एवं स्वयं पहेलियाँ/खेल बनाना।
12. अपने साथी छात्राध्यापक के गणित कक्षा शिक्षण (कम से कम 5) का विश्लेषणात्मक अवलोकन करना।
13. विभिन्न प्रकार के क्षमता वाले बच्चों के अधिगम के पाठ –योजना तैयार करना।
14. दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न प्रकार की मापन इकाईयों का अध्ययन तथा उनमें परस्पर संबंध स्थापित करना।

अंतरण की विधियां (Mode of Transaction)

- गणितीय ज्ञान के प्रति बच्चे कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, इसकी समझ हासिल करने के लिए भावी शिक्षकों को बच्चों द्वारा किए गए काम के अवलोकन पर आधारित चर्चा में बच्चों को शामिल करना चाहिए।

Scanned with Ca